‘कुँड़ुख़ भाषा साहित्य एवं संस्कृति के विकास में बिहारी लकड़ा का योगदान: एक अध्ययन’

पीएच॰डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध-प्रारूप

स्नातकोत्तर कुँड़ुख़ विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

संकाय: जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष : 2024

शोध निर्देशक

डॉ॰ नारायण भगत
कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालयए राँची

शोधार्थी

रामदेव उराँव
यू0जी0सी, नेट
एम.ए. एवं एम.फिल कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध प्रारूप

कुँड़ुख़ भाषा साहित्य एवं संस्कृति के विकास में बिहारी लकड़ा का योगदान

भूमिका:

कुँड़ुख़ आदिवासी समाज अपनी सभ्यता, सांस्कृतिक, रीति-रिवाज, नेग-दस्तूर, सामाजिक शासन व्यवस्था एवं सहयोगिता की विशिष्ट पहचान के लिए धनी है। इस पावन धरा पर कई विद्वानों ने जन्म लिए और अपनी अमिट छाप अपने पीछे छोड़ गए। जो समाज के लिए ही जन्म लेते हैं, जिन्हें जन्म-जन्मांतर तक नहीं भूला जा सकता है। आज भी हम सिनगी दई, कइली दई, चम्पू दई, इन लोगों ने रोहतास गढ़ में बहादुरी का परिचय दी इसी प्रकार से रूनियाँ, झुनियाँ जो वीरबुधु भगत की पुत्री थी। युद्ध के दौरान घायल बुधु भगत के बेटे हलधर, गिरधर और उदयकरण को पानी पिलाने के आरोप में अंग्रेजों द्वारा निर्दयतापूर्वक काट दिया गया और वे भी शहीद हो गये. उनके साथ जतरा टाना भगत, वीर बुधु भगत, कार्तिक उराँव का नाम शान से लेते है। जिन्होंने अपने भाषा, संस्कृति, समाज एवं साहित्य के लिए अपने-अपने प्राण तक न्योछावर कर दिये। वे एक पर्यटक की भांति आते हैं और चले जाते हैं। आज भी कई ऐसे विद्वान है, जो अपनी भाषा, संस्कृति, समाज और साहित्य के विकास के लिए प्रयासरत है। वे हमेशा लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।

इन्हीं में से एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी बिहारी लकड़ा हैं, जिनके व्यक्तिव एवं रचनात्मक कार्य से पूरा कुँड़ुख़ समाज प्रभावित हैं। उन्होंने कुँड़ुख़ साहित्य के विकास के लिए अथक प्रयास किया है। उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी एक अलग पहचान बनायी है।

इरादों के बदौलत उन्होंने लेखक, कलाकार, सफल किसान, शिल्प कला के साथ न जाने कितनी विधाओं में महारथ हासिल की है। उन्होंने साहित्य के साथ समाज सेवा, धार्मिक सेवा के साथ कई सामाजिक संगठनों के साथ भी जुड़े हुए हैं। अपनी मातृ भाषा कुँड़ुख़ को सशक्त रूप में विकसित करने के लिए सारा जीवन समर्पित कर रखा है, उन्होंने आदिवासी परम्पराओं, रीति-रिवाज, सामाजिक

व्यवस्था एवं धार्मिक मान्यताओं पर काफी कुछ लिखा है। उन्हें गायन, नर्तक वादक एवं साहित्य के क्षेत्र में कई बार सम्मानित भी किया जा चुका है।

झारखण्ड की भाषा-संस्कृति, साहित्य की अस्मिता को अभिव्यक्ति करने वाले कई सृजनात्मक रचनाकार हुए है। व्यक्तित्व निर्धारण का मापदण्ड मात्र व्यक्ति की बाह्य शारीरिक बनावट ही नहीं, बल्कि उसकी बौद्धिक क्षमता एवं उनके अन्दर छुपी प्रतिभा और मानवीय चेतना भी है। उनमें बिहारी लकड़ा बहुआयामी रचनाकार और संस्कृतिकर्मी हैं, जो कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के पथ प्रदर्शक और अग्रदूत हैं, उन्होंने कुँड़ुख़ भाषा साहित्य को एक नयी उँचाई प्रदान की है।

कुँड़ुख़ भाषा साहित्य आज उन्नति के मार्ग पर है। इसके गद्य एवं पद्य साहित्य काफी समृद्ध हैं। किसी भी सशक्त साहित्य का सम्यक विकास उसकी गद्य एवं पद्य विधाओं का संतुलित समानान्तर विकास पर निर्भर करता है। बिहारी लकड़ा कुँड़ुख़ भाषा साहित्य में पुरानी भाषा शैली एवं शब्दों को बड़े ही सहज भाव से प्रकट किये हैं, जो कुँड़ुख़ भाषा की शान को बनाए रखा है। वास्तव में व्यक्तित्व निर्धारण का कार्य बड़ा ही नाजुक होता है। एक छोटी सी भूल व्यक्तित्व के मूल्यांकन में दोष उत्पन्न कर सकता है। इस असान से दिखने वाले कार्य में बड़ी पेचीदगी है। साहित्यिक व्यक्तित्व का आकलन हम संबंधित साहित्यकार की सृजनात्मक प्रतिभा और उसके द्वारा रचित समग्र रचनाओं के आधार पर करते है। रचना एवं उनके समाजिक दृष्टिकोण के आधार पर साहित्यकार के श्रेष्ठ व्यक्तित्व के महत्व का आकलन किया जा सकता है।

मूल्यांकन का मूल आधार रचित साहित्यिक रचना होता है। बिहारी लकड़ा का व्यक्तित्व बहुआयामी है। वे विभिन्न प्रकार के शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक यातनाओं का सामना करते हुए भी उन्होंने अपने परिश्रम और लगनशीलता से कुँड़ुख़ भाषा जगत में अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। अतः उनके कार्य ही बहुआयामी व्यक्तित्व के मापदण्ड है। हालांकि उनकी छपी हुई पुस्तकें कम है, परन्तु उनके कई प्रकाशित रचनाएँ हैं, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में तथा पाण्डुलिपियाँ मिलती है, जिन्हें संकलन कर उनकी खोयी हुई प्रतिभा एवं कलात्मक जादू को उजागर किया जा सके।

औचित्यः

जहाँ तक हम कुँड़ुख़ भाषा, साहित्य एवं संस्कृति की बात करें तो कई विद्‌वानों ने इसकी विभिन्न विधाओं को लेकर शोध-कार्य किये हैं। स्वतंत्रता सेनानी एंव सामाजिक अगुवाओं का विभिन्न पक्षों को लेकर कुछ रचनाएँ मिल जाती है, परन्तु इसकी गहराई तक जाने की चेष्टा नहीं दिखाई देती है। बिहारी लकड़ा भी इनमें से एक है। जिनकी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कुछ न कुछ अंक देखने को मिल जाता है। परन्तु किसी ने इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर गहराई तक जाने की चेष्टा नहीं की। अतः बहुमुखी प्रतिभा के धनी बिहारी लकड़ा के अन्दर इस प्रकार की कलात्मक एवं रचनात्मक प्रवृत्ति कैसे जन्म लिया, भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के प्रति कैसे रूचि जगी, इनकी रचना का समाज पर क्या अमिट छाप बना पाएगा। इसे शोध के माध्यम से प्रस्तुत करना मूल उद्देश्य होगा।

प्रेरणाः

अध्ययन के दौरान मुझे कई विद्‌वानों की जीवनी पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। स्नातकोत्तर में अध्ययन के समय विभिन्न विद्‌वानों, साहित्यकारों के बारे में गहराई तक जानने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी दौरान बिहारी लकड़ा की पुस्तक ''कुँड़ुख़ बेंजा डंडी' एवं ''आदिवासी और लरका आंदोलन' एवं ''आदिवासियों का सांस्कृतिक इतिहास परिचय और विकास कैसे हो' और पत्र-पत्रिका के लेख अध्ययन करने का अवसर मिला। इन रचनाओं में कलम की जादुई प्रभाव स्पष्ट झलकती है। बीच-बचाव में उनके विचारों, रचना शिल्प, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यों के बारे में जानने का मौका मिला। इसी क्रम में ''ठेबले उरांव, जुएल लकड़ा, धरमदास लकड़, कार्तिक उरांव, डब्लू आर्चर, अहलाद तिर्की के बारे में जानने का अवसर प्राप्त हुआ। अपनी इस जिज्ञासा को मैंने शोधार्थी बन्दे उराँव, आरती कुमारी, सारदा तिर्की के बीच में रखा। साथ ही विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ0 हरि उराँव, डॉ0 उमेश नन्द तिवारी, डॉ0 नारायण भगत के दिशा-निर्देश एवं प्रेरणा ने मुझे गहराई तक जानने की लालसा बढ़ा दी। वहीं से मुझे ''बिहारी लकड़ा' ' के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं साहित्यक पर पीएच.डी. शोध करने की प्रेरणा मिली। इस दिशा में इनकी गहराई तक जाने का एक प्रयास होगा।

परिकल्पनाः

1. कुँड़ुख़ भाषा एवं सांस्कृतिक के विकास में बिहारी लकड़ा का योगदान अग्रणी रही है।
2. बिहारी लकड़ा कुँड़ुख़ समाज के साहित्य एवं कला प्रेमी है।
3. बिहारी लकड़ा की किये गये कार्यों से कुँड़ुख़ समाज की संस्कृति एवं भाषा के विकास में गति मिला है।

पूर्व में किए गए अध्ययनो की समीक्षाः

1. डॉ0 नारायण भगत ने अपने पुस्तक - छोटानागपुर के उराँव रीति-रिवाज (2013) में कुँड़ुख़ समाज के रीति-रिवाज को दर्शाया है।
2. डॉ0 हरि उराँव ने अपने पुस्तक हिन्दी भाषा और कुँड़ुख़ भाषा की क्रियाओं का प्रकारात्मक अध्ययन (2010) में हिन्दी और कुँड़ुख़ भाषा की क्रियाओं का विस्तृत रूप से तुलना किया है।
3. डॉ0 शांति खलखो ने अपने पुस्तक- उराँव संस्कृति परिवर्तन एवं दिशाएँ (2009) में कुँड़ुख़ संस्कृति की दिशा को दर्शायी है।
4. भीखू तिरकी ने अपने पुस्तक- उराँव सरना धर्म और संस्कृति (2011) में कुँड़ुख़ संस्कृति को विस्तार से बताया है।
5. डॉ0 रामकिशोर भगत ने अपने पुस्तक कुँड़ुख़ संस्कार गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन में गीतों को संग्रहित किया है।

समाजिक उपयोगिताः

कुँड़ुख़ भाषा साहित्य, संस्कृति के विकास में साहित्यकार का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वह समाज के विभिन्न बिन्दुओं को उजागर करता है। उसमें गहराई तक जाने का प्रयास करता है और समाज को सही ज्ञान प्रदान करता है। अतः उनकी रचना कुँड़ुख़ समाज को कितना प्रभावित करती है और किस प्रकार समाज को दिशा प्रदान करती है।

शोध का महत्व:

बिहारी लकड़ा का व्यक्तित्व एवं उनके कृतित्व, रचनाओं का प्रकाशन सम्पूर्ण कुँड़ुख़ साहित्य क्षेत्र में फैला हुआ है। प्रत्येक मनुष्य को अपनी मातृभाषा से लगाव होता है। बिहारी लकड़ा को भी अपनी मातृभाषा कुँड़ुख़ के प्रति बेहद लगाव है, तभी वे अपनी भाषा, संस्कृति के विकास के साथ उनके सामाजिक संगठनों की भी अगुवाई कर हमेशा से इन्होंने योगदान दिया है।

इनके शोध प्रस्तुत होने से निम्नलिखित महत्वपूर्ण तथ्य सामने आएगीः

1. कुँड़ुख़ भाषा-साहित्य के विकास में एक सार्थक प्रयास होगा।
2. मातृभाषा के प्रति लोगों की जिज्ञासा और रूझान बढ़ेगा।
3. साहित्य एवं संस्कृति के विकास समाज के आने वाली भावी पीढ़ी के लिए वरदान साबित होगा।
4. कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के प्रति तन्मयता, निष्ठा, विश्वास जगेगी। लोग, लोक साहित्य के प्रति आकृष्ठ होंगे।
5. भाषा - साहित्य एवं संस्कृति के साथ अपनी जनजातीय भाषाओं का मान-सम्मान एवं पहचान देश-विदेश तक पहुँचेगा

शोध विधिः

कुँड़ुख़ भाषा साहित्य एवं संस्कृति के विकास में बिहारी लकड़ा का योगदान के सही अनुसंधान के लिए निम्नलिखित पद्धति अपनायी जाएगी।

1. साक्षात्कार की सूची।
2. विश्लेषणात्मक एंव तुलनात्मक अध्ययन पद्धति।
3. शिक्षाविदों से संपर्क एवं संवाद।
4. प्रश्नावली विधि।
5. अवलोकन

शोध सामग्रीः

प्रस्तुत शोध कार्य को पूरा करने के लिए निम्नलिखित शोध सामग्री की आवश्यकता होगी।

1. कम्प्यूटर, लैपटॉप।
2. टेप रिकॉर्डर।
3. कैमरा, वीडियो कैमरा
4. विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ
5. पुस्तकालय

शोध प्रारूप

कुँडुख़ भाषा साहित्यक एवं संस्कृति के विकास में बिहारी लकड़ा का योगदान: एक अध्ययन।

प्रस्तावना

1. **प्रस्तुत शोध कार्य का औचित्य।**
2. **प्रस्तुत शोध कार्य की विषय व्यप्ति।**
3. **प्रस्तुत शोध कार्य की अध्ययन पद्धति।**
4. **प्रस्तुत शोध कार्य से संबंधित किए गए शोध कार्यों की समीक्षा।**

प्रथम अध्याय: बिहारी लकड़ा का जीवन वृत्त एवं व्यक्तित्व

1. **जन्म एवं परिवार।**
2. **शिक्षा।**
3. **राजनीति मंे प्रवेश।**
4. **नौकरी एवं सामाजिक संस्थाओं से संबंध।**
5. **उन्नत कृषक**

द्विवतीय अध्याय: व्यक्तिगत विशेषताएँ

- **क.** **अंतरिक**
- **ख.** **बाह्य**

    1. **पुरस्कार, सम्मान एवं बिहारी लकड़ा के उद्गार।**
    2. **कुँडुख़ साहित्य एवं संस्कृति में बिहारी लकड़ा का स्थान।**
    3. **स्वाभिमानी एवं निर्भयता।**
    4. **उदार हृदय**

तृतीय अध्याय: बिहारी लकड़ा की समकालीन परिस्थितियाँ

1. **सामाजिक स्थिति।**
2. **सांस्कृतिक स्थिति।**

3. साहित्यिक स्थिति।

4. आर्थिक स्थिति।

5. धार्मिक स्थिति।

6. राजनीतिक स्थिति

चतुर्थ अध्याय: बिहारी लकड़ा का कुँड़ुख़ भाषा-साहित्य एवं संस्कृति में स्थान

क. कुँड़ुख़ भाषा की ओर झुकाव तथा प्रेरणा स्रोत।

ख. बिहारी लकड़ा की साहित्य में जनजातीय संस्कृति एवं समाज।

ग. विविध कार्य।

पचम अध्याय: बिहारी लकड़ा के काव्य में भाव पक्ष एवं कला पक्ष

क. भाव पक्ष

ख. कला पक्ष

ग. भाषा शैली

षष्ठम् अध्याय: बिहारी लकड़ा का साहित्य

क. बिहारी लकड़ा का पद्य साहित्य

1. गीतकार के रूप में (प्रकाशित/अप्रकाशित)।

ख. बिहारी लकड़ा का गद्य साहित्य।

1. कहानीकार के रूप में (प्रकाशित/अप्रकाशित)।

सप्तम् अध्याय: बिहारी लकड़ा का लरका आंदोलन में योगदान

क. परिचय

ख. रूप-रेखा

ग. गीत एवं कविता

शोध निष्कर्ष

परिशिष्ट

- **संदर्भ ग्रंथ की सूची**
- **आधार ग्रंथ की सूची**
- **पत्र-पत्रिकाओं की सूची**
- **साक्षात्कार की सूची**
- **चित्रावली**

नोटः- शोध प्रारूप में आवश्यकतानुसार परिर्वतन भी किया जा सकता है।

शोध निर्देशक

डॉ॰ नारायण भगत
कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालयए राँची

शोधार्थी

रामदेव उराँव
यू0जी0सी, नेट
एम.ए. एवं एम.फिल कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथ सूची

1. अली, डॉ॰ नाफर, नईमुद्दीन मिरदाहा, जीवन और साहित्य, झारखण्ड झारोखा, 2022
2. उराँव, डॉ0 लक्ष्मी, प्रो0 पीयूस लकड़ा व्यक्तितत्व एवं कृतित्व, 2020
3. केशरी, डॉ॰ सविता, नागपुरी कवि कंचन, जीवन और साहित्य, नागपुरी संस्थान पिठोरिया, राँची, 2015
4. गिरिराज, डॉ॰ गिरीधारी राम गौंझू, पीटर शांति नवरंगी व्यक्तितत्व एवं कृतित्व, झारखण्ड झरोखा, प्र0सं0 1990, द्वितीय सं0 2014
5. तिवारी, डॉ॰ उमेशनन्द, आधुनिक नागपुरी साहित्य, झारखण्ड झरोखा प्र0 सं0, 2014
6. मिश्रा, डॉ॰ अनुपमा, सहनी उपेन्द्रपाल नहन, जीवन और साहित्य, झारखण्ड झरोखा प्रथम सं0 2018
7. साहु, डॉ॰ मनोहर प्रसाद, डॉ॰ विसेश्वर प्रासद केशरी, दृष्टि एवं सृष्टि, झारखण्ड झरोखा, 2020
8. साहु, पंचम, पांडे दुर्गानाथ राय व्यक्तितत्व एवं कृतित्व, झारखण्ड झरोखा, 2020
9. साहु, डॉ॰ सुखदेव, डॉ॰ भुवनेश्वर अनुज व्यक्तितत्व एवं कृतित्व, झारखण्ड झरोखा, प्र0 सं0 2020

संदर्भ ग्रंथों की सूची

1. उराँव, जीतू, 2010: सिन्धु घाटी कुँड़ुख़ सभ्यता और जनजातीय भूमिका, सुदर्शन प्रेस, चर्च रोड, राँची।
2. उराँव, राम कुजूर, 2003: बेंज्जा डण्डी, केन्द्रीय आदिवासी सरना आश्रम, लापुंग, राँची।
3. उराँव चौठी और महावीर, 2005: कुँड़ुख़ कत्थअइन, नव झारखण्ड प्रकाशन, पुरुलिया रोड, राँची।
4. उराँव, श्री सरन, 2002: आराध्य देववृक्ष करम शरण (पंजीकरण संख्या- प्ट 1226/2004) गहि डाड़ा चाला अखड़ा खोड़हा, हेहल, पावाटोली, राँची-5
5. उराँव, श्री सरन, 2007: कुँड़ुख़ विनती अरा धरम भजन, डाड़ा - 1, शरण पंजीकरण संख्या- प्ट 1226, गहि डाड़ा चाला अखड़ा खोड़हा, हेहल, पावाटोली, राँची-5,
6. उराँव, इन्द्रजीत, 1978: खल्ली अयंग श्री हलधर प्रेस कचहरी रोड़, राँची।
7. उराँव, डॉ0 हरि, 2010: हिन्दी भाषा और कुँड़ुख़ भाषा की क्रियाओं का प्रकारात्मक अध्ययन, के0के0 पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद
8. कुजूर ब्रदर मिखाएल, 1993: उराँव संस्कृति, कृषि विकास केन्द्र भूसाड, पत्रालय-चंदवा, जिला- पलामू, बिहार-829203
9. कुजूर आशीष विजय, 2007: कुँड़ुख़ भाषा साहित्य, साक्षी प्रिंट्स, राँची
10. कुमार आलोक अश्विनी, 2012: डॉ0 सियाराम तिवारी, साहित्य-साधना। और व्यक्तित्व, जय भारतीय प्रकाशन, 267 बी0, माया प्रेस रोड, इलाहाबाद।
11. कुमार, डॉ0 प्रमोद, 2007-2008: स्वतंत्रता सेनानी रामनारायण सिंह, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के0के0 पब्लिकेशन्स, 618, कटरा, इलाहाबाद।
12. खलखो, डॉ0 शांति, 2009: उराँव सांस्कृतिक परिवर्तन एवं दिशाएँ, कुँड़ुख़ विकास समिति, रांची।
13. गौंझू डॉ0 गिरिधारी राम, 1990 रू पीटर शांति नवरंगी, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पझरा प्रकाशन व नागपुरी प्रचारिणी सभा, राँची।

14. **चौहान**, **डॉ0 विद्या**, 1972: **लोक गीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि**, **प्रगति प्रकाशन**, **आगरा**-3
15. **टोप्पो**, **एडमण्ड**, 1976: **कुँड़ुख़ कत्थ खीरी अरा डण्डी**, **कुँड़ुख़ टेक्स्ट् बुक कमिटि**, **जनता प्रिंटिंग वर्क्स**, **काली बाबू स्ट्रीट**, **राँची**
16. **तिवारी**, **डॉ0 उमेश नन्द**, 2014: **आधुनिक नागपुरी साहित्य**, **प्रफुल्ल कुमार राय एक मुल्यांकन**, **झारखण्ड झरोखा**, **न्यू मार्केट**, **रातु रोड**, **राँची।**
17. **तिरकी**, **भीखू**, 2011: **उराँव-सरना धर्म और सांस्कृतिक**, **झारखण्ड झरोखा**, **रातु रोड**, **राँची।**
18. **तिवारी**, **योगेन्द्र नाथ**, 1970: **नागपुरी भाषा संक्षिप्त परिचय**, **योग प्रकाशन**, **राँची।**
19. **भगत**, **डॉ0 नारायण**, 2013: **छोटानागपुर के उराँव रीति-रिवाज झारखण्ड झरोखा**, **न्यू मार्केट**, **रातु रोड**, **राँची।**
20. **भगत**, **महेश**, 2015: **कुँड़ुख़ भाषा और सांस्कृतिक**, **के0के0 पब्लिकेशन्स इलाहाबाद।**
21. **मुर्मू**, **डॉ0 दुखिया रघुनाथ टुडू**: **व्यक्तित्व एवं कृतित्व**, **प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन**, **राँची।**
22. **मुण्डा**, **सत्यनारायण**, 2000: **झारखण्ड की विरासत एवं विकास**, **कैलाश पेपर कनवर्शन प्रा0लि0**, **पुरुलिया रोड**, **राँची**
23. **मुण्डा**, **रामदयाल**, 2009: **आदि धरम**, **राजकमल प्रकाशन**, **नई दिल्ली।**
24. **लकड़ा पियूष**, 1986: **अयंग जिया**, **काथलिक प्रेस**, **राँची।**

पत्र-पत्रिका

क्र.सं.	पत्र-पत्रिकाएँ	संपादक	प्रकाशित	सन् कब से
1.	‘‘नाम कुँड़ुख़त’ ’	डॉ0 अगापित तिर्की	जशपुर	1998
2.	‘‘सिनगी दई’ ’	महली लिवनस तिर्की	दिल्ली	1982
3.	बकपून	डॉ0 हरि उराँव	राँची	2011
4.	सरना फूल	डॉ॰ हरि उराँव	राँची	1987
5.	टेंको बेंको	पंकज कुजूर	राँची	2014
6.	उराँव डहरे उराँव	डॉ॰ शान्ति खलख़ो	नई दिल्ली	2010
7.	सात पड़हा	सय बन्दे उराँव	राँची	2014
8.	बीर पानी	डॉ॰ राम किशोर भगत	राँची	2023
9.	पड़हा पुपँ	बी॰ के॰ भगत	छतिसगढ़	2021
10.	बेन्जा कुन्जी	बसंत कुमार भगत	छतिसगढ़	2018
11.	पुना घोख	संजय उराँव	केन्द्रीय सरना समिति, लोहरदगा	2023